अध्याय 8

ज्ञान और मूर्तियों को चढ़ाया गया भोजन

कुरिन्थियों की कलीसिया ने पौलुस को एक पत्र लिखा था (7:1), जिसमें नैतिकता और विवाह के बारे में एक प्रश्न, या शायद कई प्रश्न शामिल थे। यूनानी-रोमी प्रथाओं से यहूदी और मसीही नैतिकता को अलग करने वाले बड़े विभाजन को देखते हुए, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि कुरिन्थियों की कलीसिया संघर्ष कर रही थी। इन पूर्व मूर्तिपूजक विश्वासियों को अपनी सोच को विवाह, निष्ठा और पारिवारिक जीवन के निहितार्थ और अनुक्रमों के अनुसार संयोजित करना था। मसीह में विश्वास ने पश्चाताप, जीवन शैली में एक बड़े परिवर्तन की माँग की। मूर्तिपूजकों की अनैतिकता स्वयं के लिये विनाशकारी और परमेश्वर के सामने लज्जा की बात थी। कलीसिया में विश्वासियों के लिये ये पुराने अभ्यास अस्वीकार्य थे।

यदि "अब के विषय में" पौलुस को उन प्रश्नों के उत्तर प्रस्तुत करना था, जिसे उसे भेजा गया था, तो कुरिन्थ की कलीसिया ने मूर्तिपूजा को छोड़ने और साथ ही अनैतिकता को छोड़ने में सहायता की विनती की थी। 8:1 के बाद, "अब विषय" की अगली व्याख्या 12:1 में है। निहितार्थ यह है कि 8 से 11 अध्याय का मुख्य विषय "मूर्तियों के सामने बलि की हुई वस्तुओं" (8:1, 4, 10) है, यद्यपि यह देखना कठिन है कि 11:2-34 इस संदर्भ में सही बैठता है।

प्राचीन संसार में, धर्म को जीवन के हर पहलू से जोड़ा गया था। एक व्यक्ति का व्यवसाय, पारिवारिक जीवन, खाली समय, सामुदायिक भागीदारी, और राजनीति का एक धार्मिक घटक था। जब एक मूर्तिपूजक एक मसीही बन जाता हैं, तो उसका रूपान्तरण उसके दिन के हर क्षण को प्रभावित करता था। उदाहरण के लिये, एक साथ भोजन करना प्राचीन सामाजिक और धार्मिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था, जैसा कि आज के लोगों के लिये है। पहली सदी के कलीसिया के सदस्यों को उनके पूर्व मूर्तिपूजा के अभ्यासों से पश्चाताप करना पड़ा था। कुरिन्थ के विश्वासियों पर मूर्तियों को बलिदान किए गए भोजन को खाने के लिये पड़ोसियों, मित्रों और परिवारों द्वारा दबाव मज़बूती से और लगातार बढ़ता जाता रहा होगा।

आज के अधिकांश लोग इस विवाद को समझ नहीं पाते हैं जो आरम्भिक मसीहियों को मूर्ति पर चढ़ाए गए मांस को खाना है या नहीं जैसे प्रश्न का सामना

करना पड़ता था। इन भाइयों ने, जिन्होंने हाल ही में मूर्तिपूजा के अपने जीवन को छोड़ दिया था, उन स्थितियों के साथ दैनिक रूप से सामना करना पड़ता था जिसमें देवताओं की पूजा अधिक या कम निहित थी। निम्नलिखित चार परिदृश्य प्रस्तुत किए गए हैं ताकि पाठकों को आज पौलुस के समय में कुरिन्थ में सांस्कृतिक और धार्मिक स्थिति की कल्पना करने की अनुमति देकर पौलुस के शब्दों को और अधिक अच्छी तरह से समझा जाए।

एक व्यापार सभा में मांस खाना। सबसे पहले, हम एक शिल्पकार, शायद एक लोहार की कल्पना कर सकते हैं। वह अपने पिता से अपने व्यापार को सीखा था और कुछ समय से कुरिन्थियों लोहार व्यापार संघ में शामिल हो गया था, जिसे लतानी बोलने वाले रोमी लोग *कॉलिजिएम* कहा करते थे। वह और अन्य लोहार बाजारों या कच्चे माल की आपूर्ति के बारे में समाचार सम्बन्धी बातचीत करने, और उनके व्यवसाय पक्ष में नीतियों के लिये सरकार के सभी स्तरों में प्रवेश करने समय-समय पर संगति के लिये इकट्ठा हुआ करते थे।

व्यापार संघ के लिये सभा स्थल धातुविज्ञान के देवता को समर्पित मन्दिर के परिसर के भीतर एक भोजन कक्ष था। वह यूनानियों के लिये "हेपेस्टस" (अग्नि और शिल्प देवता) था, परन्तु वह रोमी लोगों में "वलकैन" के नाम से जाना जाता था। संघ की बैठक से पहले, एक बकरी या सुअर को देवता को समर्पित किया जाता था। उसका चर्बी वाला भाग वेदी पर जला दिया जाता था, और पशु के मांस का बाकी हिस्सा इकट्ठा हुए लोगों को खाने के लिये दिया जाता था। सभा की शुरुवात देवता की कृपा की विनती की रीति के साथ की जाती थी। लोहार ने शायद देवता के बारे में थोड़ा सोचा था, परन्तु शायद यह सोचा कि जीवित रहने की दैनिक बातों में अलौकिक सहायता होना अच्छा होगा। वह अपने व्यापार के लिये कई लाभों से अवगत था जो कि संघ की सामूहिक आवाज के माध्यम से प्राप्त की गई थी। हाल ही में, वह एक मसीही बना था। वह संघ सदस्यता के लिये अपने नए विश्वास के प्रभाव को सुलझाने की प्रक्रिया में था। प्रश्न उठने लग गया था क्योंकि वह संघ जिससे वह जुड़ा था, वह "एक देवता से जुड़ा था, अक्सर एक मन्दिर में मिलते थे, मदिरा और बलिदान चढ़ाया करते थे, और मन्दिरों के मूरतों पर चढ़ाया गया मांस खाते थे।"[1] वह घबराहट में था। स्वयं को संघ से अलग करने गम्भीर सामाजिक और आर्थिक परिणाम भुगतने होंगे।

बौद्धिक रूप से, लोहार ने एहसास हुआ कि हेपेस्टस कुछ भी नहीं था; परन्तु सांस्कृतिक परिस्थिति के वर्षों पुराना उन प्रथाओं को त्याग करना उसके लिये कठिन हो गया था जो मूर्तिपूजक देवता से जुड़े थे। पौलुस के लिये उसका प्रश्न यह था: जब यह अच्छा व्यवसाय का मामला था, क्योंकि वह समझ गया कि परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह के समान कोई नहीं था, क्या वह उस मांस को खा सकता था जो उस मन्दिर में एक मूर्ति को समर्पित किया गया था? वह जानता था कि मूर्ति कुछ भी नहीं थी, भले ही दूसरों ने नहीं किया था। क्या उसे अपने मित्रों के साथ सम्पर्क तोड़ने की ज़रूरत थी?

एक सामाजिक सभा में मांस खाना। दूसरे दृश्य में एक स्त्री शामिल होती है जो लगभग चालीस वर्ष की रही होगी, ताकि बच्चों को उसका पूरा समय नहीं दिया जा सके। पिछले कुछ सालों से, वह समय-समय पर कुरिन्थ की अन्य स्त्रियों के साथ डेमेटर नामक देवी और उसकी पौराणिक बेटी, पर्सेफोन को समर्पित मन्दिर में इकट्ठा हुआ करती थी। दोनों कृषि देवियाँ थी, जिन्हें माना जाता था कि वे स्त्रियों के लिये अनुकूल तरीके से काम करती थीं। बैठकें सामाजिक अवसर होते थे। स्त्रियाँ अपने साथ भोजन लाया करती थी, जो छोटी लकड़ियों के कोयले की आग में तैयार किया जाता था, उसे देवी को समर्पित करती थी, डेमेटर की सहायता माँगती, जो भी घरेलू उथल-पुथल का सामना करना पड़ता, वे घर पर अपने कार्यों से अलग होकर थोड़े समय के लिये आनन्द लेती थीं।

इस स्त्री ने हाल ही में मसीह को ग्रहण किया था और बपतिस्मा लेकर उसकी आज्ञा का पालन करती थी। उसका मित्रों के साथ उसके सम्बन्ध लोहार के समान नहीं था, परन्तु उसे उस प्रश्न पर कोई शक नहीं था। क्या वह एक मूर्ति के मन्दिर में जा सकती है और अपने मसीही ग्रहण के साथ समझौता किए बिना मूर्ति को समर्पित भोजन साझा कर सकती है? अब जब वह एक मसीही थी, तो वह जानती थी कि मूर्ति का अर्थ कुछ भी नहीं था। उसने सोचा कि वह अपने मित्रों को कैसे समझाएगी कि वे अब उनके साथ मिलना क्यों नहीं चाहती थी। वह शायद पौलुस से पूछना चाहती थी कि यदि वह मसीह को ग्रहण करती है, तो क्या उसे अपने जीवन पर्यन्त मित्रों से अलग होना पड़ेगा।

घर पर मांस खाना। तीसरे मामले के लिये, हम एक परिवार पर विचार करें जो घर पर मांस खाना चाहते थे। नियमित भोजन के लिये मांस उस समय कुरिन्थ में दुर्लभ होता था, परन्तु विशेष अवसरों पर एक परिवार मांस बाजार में (μάκελλον, *माकेलोन;* 10:25) बेच सकता और कुछ खरीद सकता है। बाजार में अधिकतर मांस मूर्तिपूजक देवताओं के मन्दिरों द्वारा प्रदान किए जाते थे। एक मूर्तिपूजक, जिसे देवता की सहायता की ज़रूरत होती थी, एक उपहार के रूप में देवता के मन्दिर में एक बकरी, सुअर या एक बैल ला सकता था। पशु को मार डाला जाता, चरबी के हिस्से को वेदी पर जलाया जाता, और शेष मांस व्यापारियों को बेच दिया जाता जो इसे बाजार में ले जाते थे। कुरिन्थियों के द्वारा पौलुस के सामने रखा गया प्रश्न यह था: क्या मसीही परिवार की मेज़ पर मांस परोस सकते हैं जिसे पहले एक मूर्ति को समर्पित किया गया था?

किसी मित्र के घर पर मांस खाना। चौथी स्थिति तीसरे के समान है, परन्तु यह अन्य प्रश्न उठाती है इस परिदृश्य में किसी और के घर में भोजन करना शामिल है। यदि गैर-मसीही, शायद परिवार के सदस्यों ने, मसीहियों को उनके साथ भोजन करने का निमन्त्रण दिया, तो क्या होगा? क्या मसीही निमन्त्रण स्वीकार कर सकते हैं और खा सकते हैं, यह संदेह है कि रात्रिभोज में परोसा जाने वाला मांस सम्भवतः एक अन्यजाति देवता को समर्पित किया गया था? मसीहियों के प्रभाव, साथ ही साथ परमेश्वर के प्रति अपनी विश्वासयोग्यता का मुद्दा था।

उपसंहार। एक मूर्ति पर चढ़ाए गए मांस को खाने - विशेष रूप से, मूर्ति के मन्दिर में मांस खाने - के बारे में प्रश्न सूक्ष्म और उत्कृष्ट बारीक तर्क थे। ऐसी स्थितियों में पौलुस द्वारा "हाँ" या "नहीं," "सही" या "गलत" उत्तर नहीं दिए गए थे; अभी तक नए विश्वासियों को स्पष्ट निर्देश की आवश्यकता है। जैसे प्रेरित ने उन क्षेत्रों के बारे में मार्गदर्शन दिया, जिनमें परमेश्वर ने कोई विशिष्ट आज्ञा नहीं दी थी, वह सावधानीपूर्वक तर्क पर निर्भर था। निःसंदेह, उसने सभी मसीहियों को मूर्तिपूजा का त्याग करने की सलाह दी और इसका अर्थ था कि मूर्तियों के मन्दिरों से दूर रहना। उन्हें अपने आसपास के लोगों को यह भी सोचने की अनुमति नहीं देना चाहिए कि वे मूर्तिपूजक अनुष्ठानों में भाग ले रहे थे।

बाज़ार में खरीदारी के सम्बन्ध में, बुद्धिमान दृष्टिकोण मांस के एक टुकड़े के इतिहास के बारे में पूछने से बचना था। यदि किसी ने यह कहने का एक मुद्दा बनाया कि एक मांस जो खाने के लिये दिया जा जाता था बलि किया जाने वाला मांस होता था, एक मूर्ति को बलि किया जाता था, तो मसीही को मूर्तिपूजा के विरुद्ध खाने का अधिकार छोड़ते हुए बिना गलती के खड़ा होना था।

ज्ञान बनाम प्रेम (8:1-3)

[1]अब मूर्तियों के सामने बलि की हुई वस्तुओं के विषय में हम जानते हैं कि हम सब को ज्ञान है। ज्ञान घमण्ड उत्पन्न करता है, परन्तु प्रेम से उन्नति होती है। [2]यदि कोई समझे कि मैं कुछ जानता हूँ, तो जैसा जानना चाहिए वैसा अब तक नहीं जानता। [3]परन्तु यदि कोई परमेश्वर से प्रेम रखता है, तो परमेश्वर उसे पहिचानता है।

आयत 1. अब मूर्तियों के सामने बलि की हुई वस्तुओं के विषय में कहने के बाद, प्रेरित ने मूर्तियों को चढ़ाए गए मांस पर अपनी टिप्पणियाँ हल्की सी डाँट के साथ खुलकर शुरू की। यह उसके लिये बहुत सारे प्रश्नों के कारण नहीं था, बल्कि उनके पीछे रवैये के कारण था। ज्ञान पर विवाद से ध्यान केन्द्रित किया गया था। जो लोग मूर्ति के मन्दिर में मूर्ति को समर्पित मांस खा रहे थे, उनका मानना था कि उनके ज्ञान ने उनके व्यवहार को उचित ठहराया था। सार्वजनिक भोजन कक्ष मन्दिर परिसर में उपलब्ध होते थे।[2] मसीही जो वहाँ पर्वों में भाग ले रहे थे, इन जगहों पर खाने को, मूर्तियों की पूजा करने से पूरी तरह अलग समझते थे। क्योंकि उन्हें मालूम था कि मूर्तियों का कोई अर्थ नहीं था, इसलिये उन्होंने मांस को खाने में कोई हानि नहीं देखी, जो कि इन अस्तित्वहीन देवताओं को समर्पित थी।

पौलुस सहमत नहीं था। उसने लिखा **हम जानते हैं कि हम सब को ज्ञान है।** जिसे "ज्ञान" संदर्भित करता है वह सांसारिक ज्ञान था, और उसके बारे में वह 1:21 और 2:1-13 में पहले ही कह चुका था। पौलुस ने कहा, "ज्ञान" और "ज्ञान," जिसे कुरिन्थ के लोग स्वयं के लिये दावा करते थे, ने "घमण्ड" के स्वभाव

को उत्पन्न किया (देखें 4:18, 19)। नया नियम में क्रिया φυσιόω (*फ़ुसिऔ*, "घमण्ड" को उत्पन्न किया," शाब्दिक रूप से "फूला हुआ होना") सात बार आया है जिसमें से छः बार 1 कुरिन्थियों में आया है। ज्ञान जिसे पौलुस ने फटकारा, वह औचित्य था क्योंकि कुछ लोगों ने मूर्तिपूजक प्रथाओं को जारी रखना चाहते थे।[3]

प्रेरित के अवलोकन के अनुसार, ज्ञान घमण्ड उत्पन्न करता है, परन्तु प्रेम से उन्नति होती है दर्शाता है कि कुरिन्थियों ने प्रेम की अनदेखी कर ज्ञान में उपलब्धि पाने के लिये अपने आपको समर्पित किया था। प्रेम और ज्ञान और दोनों के बीच सम्बन्ध, प्रेरितों के निर्देशों के आधारभूत बिंदु थे। परन्तु, पूरी चर्चा में उसने इस बात पर ज़ोर दिया कि किसी भी रूप में मूर्ति पूजा को उन लोगों के लिये असहनीय बताया जो यीशु को मसीह मानते हैं। यह स्पष्ट है कि पौलुस पूरी रीति से अपेक्षा करता था कि मसीही अब वैसा नहीं रहेंगे, जैसा कि डेविड ई. गारलैंड ने कहा था, "मूर्ति मन्दिरों में पूजा करें, मूर्ति समारोहों में भाग लें, या मूर्तियों के भोज में भोजन करें।"[4]

पौलुस ने मूर्तिपूजा से समझौता करने वालों को दृढ़ता से दण्ड दिया। वह मसीहियों की प्रशंसा नहीं करते थे कि वे स्वयं को इतना मज़बूत समझते हैं, कि वे पापों से प्रतिरक्षा के रूप में मूर्तियों को चढ़ाया भोजन खा रहे थे। पौलुस दृढ़ विश्वासियों की और कमज़ोर विश्वासियों के बीच मतभेदों की मध्यस्थता नहीं कर रहा था। वह मूर्तिपूजा को छोड़ने के लिये हर किसी को चेतावनी दे रहा था।

जब प्रेरित ने निर्बल मसीहियों को 8:7-13 में बताया, तो उन्हें उन विश्वासियों के रूप में माना जाता था जिनके विश्वास को धमकाया जाएगा यदि वे अपने साथी मसीही में एक मूर्ति के मन्दिर में मूर्ति को बलि किया मांस खाते देखते थे। यह ऐसे अपराध की सम्भावना थी जो पौलुस को चिन्तित करता था (देखें 8:11)। *इस संदर्भ में उसने किसी को भी "दृढ़" नहीं कहा, और किसी को भी मूर्ति के मन्दिर में भोजन करने की अनुमति नहीं दी।*

जैसा कि पौलुस की चर्चा सामने आती है, उनकी चिन्ताओं की विशिष्ट प्रकृति अधिक स्पष्ट हो जाती है। **मूर्तियों के सामने बलि की हुई वस्तुओं** के खाने पर उनकी आपत्ति यह नहीं कहती कि एक बार मूर्ति को समर्पित मांस में कोई शैतानी शक्ति होती थी जो इसे खाते थे (10:19, 20)। एक निजी घर में ऐसे भोजन को खाने के लिये, उदाहरण के लिये, जब तक किसी भी अपने स्रोत पर ध्यान नहीं दिया गया तब तक पूरी तरह स्वीकार्य था (10:27)। पौलुस मांस खाने के बारे में चिन्तित नहीं था, यहाँ तक कि मांस जो "मूर्तियों के सामने बलि की हुई" होती थी; वह कुरिन्थियों को ऐसे भोजन को खाने के लिये डाँट रहा था जो किसी मन्दिर में देवता को समर्पित किया गया था (8:10)। जब किसी मूर्ति को समर्पित भोजन को मूर्ति के मन्दिर में खाया जाता था, तो यह काम स्वाभाविक रूप से मूर्तिपूजा था, भले ही विश्वासी ने ज्ञान की परवाह किए बिना अपील की हो।

एक मसीही अन्यजाति देवताओं से इनकार कर सकता है और "मूर्तियों के सामने बलि की हुई वस्तुओं" (εἰδωλόθυτον, *ईडोलोथुटोन)* को खाने से

तिरस्कार कर सकता है। फिर भी, मसीही की उपस्थिति एक मन्दिर में जो देवता को समर्पित हो ने घोषणा किया कि वह पवित्र भोजन खा रहा था और इस प्रकार उसने मूर्ति की पूजा में भाग लिया। यह व्यवहार मूर्तिपूजक के व्यवहार के समान था, और ज्ञान के आधार पर कोई भेद नहीं किया जा सकता (देखें 8:11)। जहाँ तक पौलुस का सम्बन्ध था, प्रेम जो कि उन्नति देता है, किसी मसीही को किसी भी परिस्थिति में मूर्ति मन्दिर में एक मूर्ति को समर्पित मांस नहीं खाना चाहिए (8:10)।

आयत 2. नियमित रूप से कुरिंथुस वासियों को मूर्तियों के मंदिर में जाने से सुधारने के लिए पौलुस ने कहा कि वास्तव में ज्ञानवान वे हैं जो अपने ज्ञान की सीमितता समझते हैं। उसने पहले ही घमण्ड से भरा ज्ञान का संबोधन किया है जो उनके विभाजन का कारण ठहरा (अध्याय 2; 3)। मूर्तिपूजा से समझौता करने वालों ने जिस ज्ञान का दावा किया था वह वैसे ही है जैसे पहले संबोधित किया गया था। इस प्रकार की बुद्धि और ज्ञान के केंद्र में अहंकार राज्य करता है। इससे पहले, प्रेरित ने कहा कि उसके शब्द "मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातें" नहीं थी (2:13; देखें 1:26-31)। कुरिंथुस वासी जो अपने ज्ञान को उच्च समझते थे, उनसे पौलुस ने कहा, **यदि कोई समझे कि मैं कुछ जानता हूँ, तो जैसा जानना चाहिए वैसा अब तक नहीं जानता**। उनको यह स्वीकार करना चाहिए था कि पौलुस का प्रेरिताई ज्ञान उनसे अलग किस्म का था।

जो दूसरों का ध्यान रखे बिना बहाने बनाने के लिए ज्ञान का प्रयोग करते हैं वह अहंकारी और आत्मिक अज्ञानी हैं। मसीही लोगों को "जैसा जानना चाहिए वैसे ही जानते हैं" तो वे यह पहचान लेते हैं कि मानवीय ज्ञान, जैसा इसका लक्षण है, अनिश्चित है। सिद्ध ज्ञान परमेश्वर के अधिकार क्षेत्र में है। हम केवल वही ज्ञान समझ सकते हैं जिसे परमेश्वर ने बोला। उन्नीसवीं सदी के ब्रिटिश लेखक विलियम कॉपर ने कहा, "ज्ञान इसलिए अहंकारी है क्योंकि उसने बहुत अधिक सीख लिया है; ज्ञान इसलिए विनम्र है क्योंकि वह और अधिक नहीं जानता है।"[5] कभी-कभी मनोविज्ञान के समान, ज्ञान भी एक बीमारी है जिसका इलाज होना चाहिए।[6]

आयत 3. जो विश्वासी परमेश्वर से प्रेम करता है, वह नहीं जो ज्ञान पर घमण्ड करता है, वह उसे पहचानता है। यदि NASB का पाठ ठीक है, तो आज्ञाकारी विश्वासी परमेश्वर को जानने के लिए इतना प्रेम नहीं करता है ताकि परमेश्वर उसको जाने। मसीही लोगों में प्रेम का अभ्यास ही उसके प्रति प्रेम का प्रमाण है। मानव जीवन का उद्देश्य, जिस प्रकार आत्मा द्वारा अगुआई प्राप्त प्रेरित ने समझा, ऐसा ज्ञान प्राप्त नहीं करना है जो एक व्यक्ति को इज़्ज़त और लाभ दे। बल्कि, यह तो जीवन दाता परमेश्वर के द्वारा जानना है और जो उसके लोगों का स्वामी है।

उपरोक्त अनुवाद का विकल्प इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है जब "परमेश्वर" (τὸν θεόν, *टोन थेयॉन)* और "उसके द्वारा" (ὑπ᾽ αὐτοῦ, *हूप' आउटू)* शब्द पाठ से हटा दिया गया है, जैसे कि हमें एक मान्यता प्राप्त और अति प्राचीन कुरिंथियों

की पत्री के प्रति और सिकंदरिया के द्वितीय सदी के विद्वान क्लेमेंट, ने इस आयत का जो पाठ प्रस्तुत किया है, पढ़ने को मिलता है। इन शब्दों को हटाने से पौलुस का समग्र तर्क अधिक सुसंगत हो जाता है। इन शब्दों को छोड़ने से, और ἔγνωσται (*एंग्नोस्टाई*, "वह जानता है") शब्द लेने से, हमें इसका अनुवाद इस प्रकार मिलता है: "यदि कोई प्रेम रखता है, तो वह सचमुच जानता है।" कर्मवाच्य में इसका अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता है, "यदि कोई प्रेम रखता है, तो वह सचमुच जाना गया है।" इस अनुवाद में आकर्षण है, लेकिन दस्तावेज़ों का प्रमाण इसके दीर्घ पाठ का समर्थन करते हैं। सुझाए गए पाठ स्वीकार करना अनिश्चित है क्योंकि यह एक उपन्यास विचार प्रस्तुत करता है।

परमेश्वर बनाम मूर्तियाँ (8:4-6)

[4]अत: मूर्तियों के सामने बलि की हुई वस्तुओं के खाने के विषय में - हम जानते हैं कि मूर्ति जगत में कोई वस्तु नहीं, और एक को छोड़ और कोई परमेश्वर नहीं। [5]यद्यपि आकाश में और पृथ्वी पर बहुत से ईश्वर कहलाते हैं - जैसा कि बहुत से ईश्वर और बहुत से प्रभु हैं - [6]तौभी हमारे लिये तो एक ही परमेश्वर है: अर्थात् पिता जिसकी ओर से सब वस्तुएँ हैं, और हम उसी के लिये हैं। और एक ही प्रभु है, अर्थात् यीशु मसीह जिसके द्वारा सब वस्तुएँ हुईं, और हम भी उसी के द्वारा हैं।

आयत 4. पौलुस ने कुरिंथुस वासियों के सम्मुख ज्ञान और प्रेम के बीच पारस्परिक संबंध पर विचार करने के द्वारा चर्चा करने के लिए एक नींव रख दी थी। इसके पश्चात वह उस विषय वस्तु की ओर फिरा जिसके बारे में चर्चा करना अति आवश्यक था: मंदिरों में मूर्तियों को चढ़ाए गए भोजन के खाने के बारे में। उसने इस भोजन के बारे में ऐसा कहा कि जो **मूर्तियों** (*ऐडोलोथूटोन*) **को चढ़ाया गया है**, लेकिन मूर्तिपूजक इस भोजन को "ईश्वर को चढ़ाए गए भोजन [ἱερόθυτον, *हीरोथूटोन*]" कह सकता था।[7] जिस मूर्तिपूजक ने पौलुस के इस तर्क को समझा होगा, उसको या तो इस बात से ठोकर लगी होगी या फिर संभवत: वह क्रोधित हुआ होगा। क्योंकि पौलुस ने इसको ईश्वर को चढ़ाए जाने से इनकार किया था। प्रेरित को पता था कि किसी भी जानवर को मूर्तियों के मंदिर में चढ़ाए जाने से उसका मांस पवित्र नहीं होता है। एक सज्जन यहूदी या मसीही व्यक्ति मूर्तियों के बारे में केवल इतना कह सकता था, "मूर्तियों के सामने बलि की हुई वस्तु," मूर्तियों के मंदिर, और मूर्तियों की उपासना का कड़ा विरोध करो।

हालांकि, कुरिंथुस के मसीही लोगों ने जिस ज्ञान का दावा किया था उसके बारे में पौलुस ने चर्चा की है। जब एक पशु मूर्तिपूजकों के देवता के सम्मुख बलि किया जाता था, तो उसका अधिक महत्व नहीं होता था। ये देवता मूर्तिपूजकों की कल्पना मात्र थे, जो मूर्तिपूजकों की अज्ञानता का प्रतीक था। पौलुस ने इस बात

को ज़ोर देकर कहा कि इस प्रकार के देवताओं का **जगत में** कोई अस्तित्व नहीं है। उसने, जो मूर्तियों की उपासना करते हैं उनके मध्य आसमान की शैतानी शक्ति और अदृश्य शक्ति कार्य करने की बात मानी (10:20; देखें कुलुस्सियों 1:16)। फिर भी, "जगत में" इनका स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है; वे पतित मस्तिष्क की सृजन हैं।

मूर्तिपूजकों के देवता अस्तित्व में नहीं हैं; केवल एक ही परमेश्वर है जो सदाकाल से अस्तित्व में है। यहूदी धर्म की शेमा की मूलभूत शिक्षा यह थी: "हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है" (व्यवस्थाविवरण 6:4)। जीवित परमेश्वर और मूर्तियों के बीच अंतर समझाने के लिए भजनकार ने कहा, "हमारा परमेश्वर तो स्वर्ग में हैं; उसने जो चाहा वही किया है। उन लोगों की मूरतें सोने चांदी ही की तो हैं, वे मनुष्यों के हाथ की बनाईं हुई हैं" (भजन 115:3, 4)। जोसेफ़स ने लिखा,

> सारी सामग्री, खूब महंगे हो जाएं, उसके लिए मूर्ति बनाने के लिए अयोग्य हैं; और सारी कला उसके गुण का प्रकटीकरण करने के लिए कलारहित हैं। न तो हम उसके समान देख सकते हैं और न ही सोच सकते हैं और न ही उसके तुल्य कुछ बनाने के लिए हम सहमत हो सकते हैं।[8]

आयत 5. तथाकथित देवता पतित मानव की सृजन है। मूर्तिपूजकों ने अज्ञानतावश इनमें से कुछ को **आसमान पर** तो कुछ को **धरती पर** स्थापित कर दिया है। ऐसा जान पड़ता है कि वे हर कोने में झांकते रहते हैं। चौराहों पर हरमिस के छोटे-छोटे वेदियां बनी थी। हरेक पेड़ों के झुंड, हरेक झरना, और हरेक घर के चूल्हे पर उसके देवी, वन देवता, आत्माएं, और दुष्टात्माएं थीं। यूनानी मिथ्याओं में ओलिंपिया के देवताओं को ऊंचे पर्वतों पर या आसमानों पर स्थापित दर्शाया गया है। कम से कम कुरिंथुस के कुछ मसीही लोग इस यूनानी दैवेत्व के धारणा से परिचित थे। जबकि उन्होंने यूनानी-रोमी संस्कृति के **बहुत से ईश्वर और बहुत से प्रभुओं** की उपासना की थी तो उनके लिए अपने भूतकाल से मुड़कर जीवित परमेश्वर की उपासना करना कठिन था।

आयत 6. मसीही लोग मंदिरों में मूर्तियों को चढ़ाए गए मांस खाने या न खाने के किसी भी नतीजे पर क्यों न पहुँचे हों, उनको परमेश्वर की एकता, मूर्तियों के अस्तित्व न होने, और जिस उत्साह से मूर्तिपूजक अपने मूर्तियों की उपासना करते थे, उसके आधार पर उन्हें अपने व्यवहारों का मूल्यांकन करना था। उनके विपरीत जो मूर्तियों की उपासना करते थे, मसीही लोग एक ही **परमेश्वर** को **पिता** के रूप में जानते थे। पौलुस की शिक्षा कि परमेश्वर, यीशु मसीह के पिता, एक ही है और सब बातों का सृष्टिकर्ता है, ने प्राचीन काल की दैवत्व के बारे में विचारधारा को चुनौती दी। यहूदी धर्म और मसीही मत में परमेश्वर की एकता के बारे में इतना प्राथमिक है कि इन मतों में इस विचारधारा को बार-बार दोहराया गया है (देखें 8:4)। वह सभी का जीवनदाता है और यह जीवन उसी के द्वारा स्थिर है; मसीह में **सब वस्तुएं हुईं, और हम भी उसी के**

द्वारा हैं।

बाइबल की अति महत्वपूर्ण सिद्धांत यह है कि परमेश्वर ही सृष्टिकर्ता है परंतु तर्क परमेश्वर के अस्तित्व को उसे सृष्टि का सृष्टिकर्ता मानने से इनकार करता है। प्राचीन लोगों की यह मान्यता थी कि देवी-देवता कायनात की सृष्टि हैं, वे कायनात के सृष्टिकर्ता नहीं है। प्राचीन अक्कादी सृष्टि मिथ्या *एनुमा एलिस* (जिसका अर्थ "जब ऊँचाई पर") अनुमान लगाती है कि देवता आरंभिक (आदिम) मिट्टी से पैदा हुए हैं। मानव जाति के माता-पिता होने के बजाय ऐसा माना जाता है कि इन देवताओं ने जातियों की सेवा करने के लिए इनकी सृष्टि की। अक्काद मिथ्या के अनुसार देवता मनमौजी और मानवीय पीड़ा से अज्ञान थे।[9] पौलुस की शिक्षा कि परमेश्वर, यीशु मसीह के पिता, एक ही है और सब वस्तुओं का सृष्टिकर्ता है, ने प्राचीन काल की दैवत्व की धारणा को चुनौती दी।

पौलुस के दृष्टिकोण से मूर्तियां मनुष्यों की कल्पना मात्र है। उनका जन्म अहंकार और अज्ञानतावश हुआ है। इस्राएल के परमेश्वर की ज्ञान का स्रोत परमेश्वर के स्व-प्रकाशन में निहित है। परमेश्वर पिता की तुलना जगत के देवताओं से नहीं की जा सकती है। निष्पक्ष परमेश्वर, इस्राएल और जगत की जातियों को एक समान प्रेम करता है (प्रेरितों.10:34; रोम.2:11)। परमेश्वर सभी प्राणियों का पालन पोषण करता है; **हम भी** उसी के द्वारा हैं।

परमेश्वर की एकता पर समझौता किए बिना, पौलुस **एक प्रभु, यीशु मसीह** पर चर्चा करने के लिए आगे बढ़ जाता है। यीशु मसीह का प्रभुत्व किसी तरीके से परमेश्वर की एकता से ध्यान नहीं बांटता है। परमेश्वर ही सारी वस्तुओं का स्रोत है, परंतु यीशु के बारे में उसने यह कहा कि "जिसके द्वारा सारी चीज़ें हैं" भी सटीक है। जो पिता के लिए हम कह सकते हैं वह पुत्र के लिए भी कह सकते हैं। जबकि यह कहना ठीक होगा कि मानव जाति का अस्तित्व परमेश्वर के लिए है, तो यह भी सत्य है कि हमारा अस्तित्व मसीह के द्वारा है। जबकि नये नियम में "त्रिएक" जैसा कोई शब्द नहीं पाया जाता है, लेकिन कुछ ऐसी धारणाएं भी आवश्यक है। नया नियम केवल परमेश्वर को ही आदर नहीं देता बल्कि मसीह को भी पूरा आदर देता है। आदि से यीशु परमेश्वर है (यूहन्ना 1:1)। उसमें परमेश्वर की परिपूर्णता है (कुलु. 2:9)।

पौलुस, परमेश्वर के मसीह का रूपक विश्लेषण करने के लिए आगे बढ़ जाता है; वह बुद्धि में अवतरित हुआ है। यह रूपक कुलुस्सियों 1:15-17 में स्पष्ट किया गया है। पौलुस द्वारा यीशु का चित्रण पुराने नियम के, विशेषकर नीतिवचन की पुस्तक में, बुद्धि के रूप में दिखाई देता है। टीकाकार बुद्धि के इस रूपक को "बुद्धि" ("Lady Wisdom") कहते हैं।[10] यीशु के बारे में पूर्वाभास करने वाले शब्दों में, बुद्धि यह घोषणा करती है, "यहोवा ने मुझे काम करने के आरम्भ में, वरन अपने प्राचीनकाल के कामों से भी पहिले उत्पन्न किया। मैं सदा से वरन आदि ही से पृथ्वी की सृष्टि के पहिले ही से ठहराई गई हूँ" (नीति. 8:22, 23)। पौलुस ने बुद्धि के लक्षण को एक व्यक्ति विशेष यीशु नासरी पर बदल डाला जब उसने लिखा, "वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा

है। क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई" (कुलु. 1:15, 16)। बुद्धि के समान, यीशु भी आरंभ से है; और बुद्धि के समान, उसी के द्वारा ही सृष्टि हुई।

पौलुस ने 8:1 में जो बात लिखी उसे उसने अपने पाठकों के साथ ज्ञान बांटकर रेखांकित किया: उन सबको निराशाजनक बातें और अज्ञानतावश मूर्तियों को पूजने की बातें समझनी चाहिए थी। यह सत्य था कि मूर्तियों को चढ़ाए गए भोजन खाना, या मूर्तियों के मंदिरों में मूर्तिपूजा से संबंधित रीति रिवाज़ में शामिल होने (8:10), से उनको कोई फ़र्क नहीं पड़ता है जो यह जानते हैं कि मूर्तियां कुछ भी नहीं हैं। फिर भी, प्रेरित ने यह बताया कि मसीही लोग अकेले ही नहीं जीते हैं; हर एक जन विश्वासियों की मण्डली में एक समान योगदान देते हैं। बाद में उसने लिखा कि हम "मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं" (रोम.12:5)। आज के मसीही लोगों को पौलुस के शिक्षा से सीख लेनी चाहिए। पापों की क्षमा में सहभागी होना और अनंत जीवन की आशा, एक दूसरे के साथ बांटने का अर्थ प्रभु यीशु को व्यक्तिगत जीवन में निमंत्रण देने से बढ़कर है। ये सारी आशीषें समुदाय में ज़िम्मेदारी के साथ रहने के द्वारा ही आती हैं। व्यक्ति विशेष का व्यवहार पूरे देह को प्रभावित करता है।

ज्ञान और इसकी सीमितता (8:7-13)

पौलुस इस बात पर पहले भी ज़ोर दे चुका है कि ज्ञान महत्वपूर्ण है, परंतु यह प्रेम का स्थान नहीं ले सकता है (8:1)। उसको यह बताने की आवश्यकता पड़ी कि किस प्रकार ज्ञान पर पूर्णतया निर्भर होने से यह प्रेम के महत्व को कैसे कम कर सकता है। जिन मसीही लोगों ने मूर्तियों को चढ़ाए गए मांस खाने को ज्ञान के आधार पर उचित ठहराने का प्रयास किया उन्होंने ऐसा अपने भाइयों के प्रति प्रेम की बलि चढ़ाकर किया। उसने उन्हें डांट लगाई क्योंकि मसीही होने का तात्पर्य एक सामुदायिक जीवन होना है। नया नियम अलग थलक पड़े मसीहियत का वर्णन नहीं करता है।

कोई भी समुदाय में दूसरे विश्वासी के साथ संगति किए बिना "मसीह में" नहीं हो सकता है। मसीह के शिष्य सामूहिक रूप से उसका देह, कलीसिया का निर्माण करते हैं (इफि. 1:22, 23)। एक अकेला मसीही जब कलीसिया से अलग हो जाता है तो वह कटे हुए पेड़ की टहनी की तरह होता है (यूहन्ना 15:1-6); यह कोई फल नहीं ला सकता है। इसलिए, जब एक विश्वासी मूर्तियों के मंदिर में बैठ जाता है, तो उसका ज्ञान या उसकी कमी कोई बहाना नहीं होता है। एक अकेला विश्वासी क्या करता है उसका अवलोकन कलीसिया के द्वारा किया जाता है। किसी व्यक्ति विशेष का व्यवहार का परिणाम उसका स्वयं और प्रभु के बीच का मामला नहीं है। एक मसीही का व्यवहार पूरी देह में प्रभाव डालता है।

प्रेरित ने कलीसिया में कुछ लोगों को मूर्तियों के चढ़ाए गए मांस खाने के लिए भी झिड़का क्योंकि ऐसा करने से वे दुष्टात्माओं की मेज़ में भाग ले रहे थे (देखें 10:14-21)। इस्राएलियों का अनुभव यह बताता है कि बहुत समय तक

मूर्तिपूजकों के संग रहने का परिणाम मूर्तिपूजा होता है। कलीसिया में मूर्तिपूजकों के लिए कोई स्थान नहीं है। इन भाइयों का मूर्तिपूजकों के साथ खाने-पीने का परिणाम भी वैसा ही हो सकता है जैसे कि इस्राएलियों ने किया था। विश्वासियों का एक दूसरे से और परमेश्वर के साथ संबंध का पैमाना, प्रेम होना चाहिए। पौलुस यह चाहता था कि कुरिंथुस के विश्वासी यह जाने कि मूर्तिपूजकों के रीति रिवाज़ में किसी भी स्तर तक सहभागी होने के लिए ज्ञान को ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है। यह उनके लिए जो मसीह के द्वारा बचाए गए हैं, स्वीकार्य आचरण नहीं है।

निर्बल भाई का विवेक (8:7, 8)

प्रेरित, 1 कुरिंथियों में, मूर्तियों को दुष्टात्माओं का प्रतिनिधि करके वर्णन करेगा। परंतु इस समय, उसकी चिंता केवल इतना है कि विश्वासियों के आपसी संबंध और परमेश्वर के साथ संबंध में प्रेम ही उनका मार्गदर्शन हो। न तो यहाँ और न ही इसके पश्चात प्रेरित ने ऐसा कोई संकेत प्रस्तुत किया है जहाँ वह कुरिंथुस के सबल और निर्बल विश्वासियों के बीच झगड़े का एक तरफ़ा न्याय करता हो। उसका उद्देश्य कुरिंथुस के विश्वासियों के बीच सामान्य प्रचलित भावना कि जिस प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने का उन्होंने दावा किया था, जो वे मूर्तिपूजकों के धार्मिक अनुष्ठान, जो देवी-देवताओं को समर्पित था और उसको उचित ठहराते थे, का सामना करना था। प्रेरित को इस प्रकार का आचरण स्वीकार्य नहीं था।

[7]परन्तु सब को यह ज्ञान नहीं; परन्तु कितने तो अब तक मूरत को कुछ समझने के कारण मूरतों के सामने बलि की हुई को कुछ वस्तु समझ कर खाते हैं, और उन का विवेक निर्बल होकर अशुद्ध होता है। [8]भोजन हमें परमेश्वर के निकट नहीं पहुँचाता, यदि हम न खाएं, तो हमारी कुछ हानि नहीं, और यदि खाएं, तो कुछ लाभ नहीं।

आयत 7. यूनानी समुच्यबोधक **परंतु** *ἀλλά (अल्ला)* विरोधाभास प्रकट करता है और इसका सामान्य अनुवाद "परंतु" किया जाता है। नींव डालने के पश्चात अब प्रेरित उस पर निर्माण करने के लिए तैयार है।

न तो पौलुस और न ही कुरिंथुस वासी भूतकाल में दिए गए परमेश्वर के संदेश से असहमत थे। भविष्यवक्ताओं में सबसे बड़ा भविष्यवक्ता यिर्मयाह ने यह बताया कि झूठे ईश्वर इतने असहाय थे कि उनको सीधे रखने के लिए उनके चित्रों को कीलों से जड़ना पड़ता था। वे तो खीरे के खेत में पक्षियों को भगाने वाले पुतले के समान थे (यिर्म. 10:4, 5)। इस्राएल के परमेश्वर से भिन्न, घृणित मूर्ति किसी पर भी, चाहे मसीही लोग हो या फिर मूर्तिपूजक, श्राप या आशीर्वाद नहीं ला सकते हैं (यशा. 45:7; NRSV)। फिर भी, यह सब जानने के बाद मसीही लोगों से परमेश्वर की, जो सब वस्तुओं का सृष्टिकर्ता और प्रभु है, की एकता का सार्वजनिक और व्यक्तिगत गवाही देने की आवश्यकता विलुप्त नहीं हुई।

प्रतीकात्मक कार्य सहभागिता का गुण है; जिन लोगों ने मंदिरों में चढ़ावा खाया उनको बाहरी तौर से मानसिक अलगाव होने के कारण, यूनानी-रोमी मूरतों की आराधना करने से नहीं रोका।

मसीही प्रभाव के कारण, ज्ञान, मूर्तिपूजकों के रीति रिवाज़ में भाग लेने को उचित नहीं ठहराता है। यद्यपि पौलुस ने यह माना कि कुछ लोगों को उत्तम ज्ञान प्राप्त है, लेकिन यह सत्य है कि **सबको यह ज्ञान नहीं है**। हरेक व्यक्ति को इस बात पर विचार करना चाहिए कि उसका कार्य दूसरों पर कैसे प्रभाव डालता है। पौलुस किसी पर भी "निर्बल" होने का दोष नहीं लगा रहा है। लोगों के बारे में जानते हुए, प्रेरितों को लगा कि कुछ लोग जिन्होंने मसीह को ग्रहण किया था, यदि वे सम्मानित भाई-बहनों को मूर्तियों के मंदिरों में आयोजित संस्कारों में भाग लेते हुए देखेंगे तो यह निष्कर्ष निकालेंगे कि मूर्ति पूजा अभी भी स्वीकार्य है। इसके साथ ही उनके साथ के भाई-बहनों पर होने वाले प्रभाव के अलावा जो लोग मूर्तियों के मंदिरों में भोजन के लिए बैठते हैं, वे मसीहियत के बारे में इस बात की घोषणा विशाल अविश्वासियों के समुदाय में करते हैं। देखने वाले इसका यह निष्कर्ष निकालेंगे कि मसीह भी अन्य देवताओं के समान एक और देवता है जिसे उन्हें अपने जीवन में शामिल कर लेना चाहिए।

यदि एक मसीही गलत उदाहरण प्रस्तुत करता है तो **जो लोग मूर्तियों को चढ़ाए गए भोजन ग्रहण करते हैं** वे दुःख उठाएंगे।[11] **उनका विवेक दूषित** ठहरेगा क्योंकि यह **निर्बल** है। पौलुस ने जिस "विवेक" शब्द का प्रयोग किया है उसे मनुष्य के अंतरात्मा से उठने वाली एक शांत, मंदिम आवाज़ के साथ नहीं मिलाना चाहिए, जो कुछ व्यवहारों को उचित ठहराता है तो अन्य को दोषी। जब एक व्यक्ति दूसरे को मूर्तियों के मंदिर में भोजन करते हुए देखे तो उसका विवेक कैसे मलिन हो सकता है? विवेक को चोट पहुँच सकती है, लेकिन यह कैसे मलिन हो सकता है?

पौलुस के समकालीन लोगों के लिए "विवेक" (συνείδησις, *सुनैडेसिस)* एक महत्वपूर्ण सामाजिक आशय रखता है। यह शब्द न केवल उनके मस्तिष्क की *"ठीक और गलत के बीच विभेद करने की आंतरिक ज्ञान"*[12] (देखें रोम.2:15) का विश्लेषण करता है बल्कि यह परिवार के सदस्यों, पड़ोसियों और मित्रों के साथ जो आंतरिक ज्ञान के साथ तालमेल रखते हैं, का संबंध भी दर्शाता है। विवेक में दूसरों की सहमति और असहमति शामिल हैः "समूह में रहने वाले समाज में, ... विवेक, सलाह, परंपरा, कायदे-कानून, बड़ाई, और जिनके साथ हम रहते हैं, उनके विरोध का सामना भी निहित है।"[13]

जब एक विश्वासी परमेश्वर की एकता समझने में असफल रहता है और वह किसी मसीही व्यक्ति को मूर्तियों के मंदिर में खाते हुए देखता है, तो उसको उसमें मूर्तिपूजकों के संस्कारों में स्वयं शामिल होने की स्वीकृति दिखाई देती है। जो मसीही व्यक्ति इस बात का दावा करता है कि उसका ज्ञान उसको मूर्ति के मंदिर में खाने की अनुमति देता है तो इस प्रकार वह दूसरे व्यक्ति के विवेक को दोषी ठहराता है।

आयत 8. किसी भी दशा में, पौलुस ने तर्क किया कि **भोजन हमें परमेश्वर के निकट नहीं पहुँचाता है**। "भोजन" के लिए पौलुस ने एक जातिगत शब्द *ब्रोमा* (βρῶμα, *ब्रोमा)* प्रयोग किया था; इसमें किसी भी प्रकार का पवित्र किया गया मांस या सामान्य किस्म का मांस का संदर्भ नहीं है। प्रेरित इस बात से सहमत था कि एक विश्वासी जिस प्रकार का भोजन करता है उसमें भक्तिपूर्ण जीवन जीने का थोड़ा महत्व था। **यदि हम न खाएं, तो हमारी कुछ हानि नहीं, और यदि खाएं, तो कुछ लाभ नहीं**। चूंकि यूनानी-रोमी नगर में मांस किसी विशेष अवसर पर खाया जाता था, तो जिन लोगों ने मूर्तियों के मंदिर में जाना बंद कर दिया था तो उन्होंने मांस खाना बंद कर दिया होगा। जेरोम मर्फी-ओकोनर ने प्रमाणित किया कि यूनानी-रोमी साम्राज्य में मांस केवल विशेष अवसर पर ही उपलब्ध होता थाः

> केवल भव्य मूर्तिपूजकों के त्यौहारों के अवसर पर ही कुरिंथुस के बाज़ारों में या अन्य नगरों में मांस उपलब्ध रहता था। सीमित समय के अंतर्गत कई बलिदान चढ़ाए जाते थे। इसलिए बलि चढ़ाने वाला या याजक लोग पूरा मांस नहीं खा पाते थे।[14]

पौलुस का मसीही लोगों से सामाजिक अवसर, भोज, या प्रेम भोज इत्यादि हटाने की इच्छा नहीं थी। इसके साथ उसने उन्हें स्मरण दिलाया कि मूर्तियों के मंदिरों में भोजन न करना एक बहुत बड़ा आत्मबलिदान नहीं है। इस प्रकार के मांस खाने से बचने के द्वारा आत्मिक लाभ ही मिल सकता है। मसीही लोगों को मूर्तियों के मंदिरों में भोजन न करने की परंपरा त्यागने के कारण जो भी सामाजिक और आर्थिक परिणाम भुगतना पड़े, उन्हें स्वीकार करना होगा।

विवाह और नैतिकता से संबंधित प्रश्न भी मांस खाने से संबंधित प्रश्नों से मिलता जुलता है। न तो लैंगिक अभिव्यक्ति और न ही मांस खाने में कोई बुराई है; परिस्थिति ही इन कार्यों को सही या गलत के रूप में चिन्हित करता है (देखें प्रका. 2:14)। जब सावधानीपूर्वक इस अनुच्छेद को पढ़ते हैं तो पता चलता है कि पौलुस निर्बल और बलवान मसीहियों के बीच विवाद का मध्यस्थता नहीं कर रहा है। बल्कि, वह तो उन लोगों का सामना कर रहा था जो ज्ञान का सहारा लेकर उन संस्कारों में भाग ले रहे थे जो मूर्तिपूजकों के मध्य ही पाया जाता था।

ठोकर का कारण न बनने का निर्णय (8:9-13)

[9]परन्तु सावधान! ऐसा न हो कि तुम्हारी यह स्वतंत्रता कहीं निर्बलों के लिये ठोकर का कारण हो जाए। [10]क्योंकि यदि कोई तुझ ज्ञानी को मूर्ति के मन्दिर में भोजन करते देखे और वह निर्बल जन हो, तो क्या उसके विवेक को मूर्ति के सामने बलि की हुई वस्तु खाने का साहस न हो जाएगा। [11]इस रीति से तेरे ज्ञान के कारण वह निर्बल भाई जिसके लिये मसीह मरा, नष्ट हो जाएगा। [12]इस प्रकार भाइयों के विरुद्ध अपराध करने से और उनके निर्बल विवेक अर्थात्, मन या

कॉनशन्स को चोट पहुँचाने से, तुम मसीह के विरुद्ध अपराध करते हो। 13इस कारण यदि भोजन मेरे भाई को ठोकर खिलाए, तो मैं कभी किसी रीति से मांस न खाऊँगा, न हो कि मैं अपने भाई के लिये ठोकर का कारण बनूँ।

आयत 9. जबकि प्रेरित ने, आत्मा की प्रेरणा के द्वारा 8:8 में एक वैध बात तो स्वीकार कर ली थी, लेकिन वह उससे आगे यह कह रहा था कि उसके पाठक उसके प्रश्न के दूसरे महत्वपूर्ण पहलू पर विचार करने में असमर्थ हो रहे थे। यह सत्य है कि भोजन किसी भी रूप में विश्वासियों को परमेश्वर के सम्मुख विश्वासपात्र नहीं बना रही थी। कौन क्या खाता है या नहीं खाता है, से उसके आत्मिकता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है; परंतु **स्वतंत्रता** या अधिकार (ἐξουσία, *एक्सूसिया)* की अपील पर कोई भी एक दूसरे के प्रति प्रेम न त्यागे (8:1)। जब किसी की "स्वतंत्रता" **का प्रयोग निर्बलों के लिये ठोकर का कारण हो जाए,** तब उसको यह जान लेना चाहिए कि उसका ज्ञान ऊपर से नहीं है। कोई भी मसीही, जो कुछ वह करता है, विशेषकर जब यह विश्वास को कमज़ोर करता हो और विश्वासियों की एकता को तुच्छ जानता हो, और उसको वह यह कहकर उचित ठहराता है कि उसको ऐसा करने का अधिकार प्राप्त है, तो उसके प्रेम में कुछ समस्या है।

आयत 10. जब कुरिंथुस के मसीहियों ने इस बात पर ज़ोर दिया कि मूर्तियों की अयोग्यता के बारे में उनके ज्ञान ने उन्हें मूर्तिपूजा से बचाए रखा, तो पौलुस ने कहा कि मूर्तिपूजा के बारे में उनका ज्ञान अति संकीर्ण है। यदि उनके तर्क में सैद्धांतिक महत्व भी हो, तौभी उनका व्यवहार निर्बल भाई या बहन को मूर्तियों की पूजा करने के लिए उत्साहित करेगा। उनमें से कुछ लोग, जिन्होंने मसीह को उद्धारकर्ता करके ग्रहण किया था और बपतिस्मा लेकर उसकी आज्ञा भी माना था, वे पश्चाताप के लिए संघर्ष कर रहे थे: क्योंकि वे मूर्तिपूजा को सच्चे परमेश्वर की आराधना से अलग करने वाली सीमा रेखा के निकट रहते थे। यह मान्यता कि इस संसार में मूर्तिपूजा की आत्मा और देवी-देवताएं की आत्माएं जो कार्य करतीं हैं, उन पर विजय पाना अत्यंत कठिन था। प्रेरित ने इस बात की प्रतिज्ञा नहीं की कि मसीह का अनुकरण करने से उन्हें इस संसार का सामना नहीं करना पड़ेगा। यह कि जब एक मसीही को दूसरा मसीही **मूर्तियों के मंदिर में भोजन करते हुए देखे**, जैसा कि उन्होंने दृश्य को समझ लिया था, तो इस बात ने **निर्बल** भाई को परमेश्वर की पवित्रता और प्रभुता से समझौता करने के लिए उत्साहित किया। जो अपने आपको ज्ञानवान समझते थे वे "निर्बल" भाइयों के **विवेक** को, भरमाने और जो वे विश्वास करते थे उसके साथ समझौता करने के द्वारा, दूषित कर रहे थे। अपने ज्ञान की आड़ में उन लोगों के व्यवहार के द्वारा दूसरों को मूर्तियों के भोज में शामिल होने का साहस मिल रहा था (οἰκοδομηθήσεται, *ओईकोडोमेथेसेटाई)।* इस क्रिया शब्द के द्वारा, पौलुस के वक्तव्य का शाब्दिक अर्थ यह है, निर्बल भाई के विवेक को **मूर्ति के सामने बलि की हुई वस्तु खाने** का **साहस** हो जाएगा।

आयत 11. अनंतता का विचार पौलुस के मन से कभी दूर नहीं रहा। उसने निरंतर इस धरती की दैनिक कार्यकलाप से अपनी आँखें ऊपर परमेश्वर के न्याय की ओर उठाई, जब "हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए" (2 कुरिं. 5:10)। पहला कुरिंथियों 8:11 के अनुसार, न्याय के दिन, परिकल्पित निर्बल मसीही, मूर्तियों के मंदिर में मांस खाने के लिए जो दूसरों के ज्ञान पर निर्भर रहा, **नाश** हो जाएगा। प्रेरित ने भाई के नाश होने के संबंध में इस वाक्यांश के प्रारंभ में "नाश हो जाएगा" (ἀπόλλυται, *आपोलुटाई)* क्रिया लिखकर ज़ोर दिया है। इसके साथ ही, उसने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि वह **उस भाई के बारे में बात कर रहा था जिसके लिए मसीह मरा। तेरे** (σός, *सोस)* एक मज़बूत संबंधवाचक सर्वनाम है। पौलुस का उनसे जो यह कहते थे कि उनका ज्ञान मूर्तिपूजा को उचित ठहराता है, सीधा प्रश्न यह था, "क्या तुम अपने **ज्ञान** को, जिस उद्देश्य के लिए मसीह मरा नकारने की अनुमति देते हो? क्या तुम्हारे अधिकार का दावा बस इतना ही है? क्या तुम्हारे लिए तुम्हारे भाई के नाश होने का यही तात्पर्य है? क्या कोई अपनी व्यक्तिगत रूचि को मसीह की देह के खुशहाली के ऊपर रख सकता है?"

आयत 12. पौलुस यह बता रहा था कि एक मसीही का परमेश्वर के साथ संबंध, उसका मसीह के देह में दूसरे सदस्यों के साथ संबंध में निहित है। कलीसिया, परमेश्वर के लोगों का समुदाय है (कुलु. 1:24)। मन परिवर्तन का परिणाम एक नये जीवन शैली में दिखाई देना चाहिए। पौलुस ने कहा **भाइयों का अपराध करने से ओर उन के निर्बल विवेक को चोट देने से तुम मसीह का अपराध करते हो।**

प्रेरित अपनी दमिश्क के मार्ग का अनुभव संभवतः स्मरण कर रहा था। वह "प्रभु के चेलों को धमकाने और घात करने की धुन में था" (प्रेरितों.9:1)। जब प्रभु उस पर प्रकट हुआ, तो उसने उससे यही कहा, "हे शाऊल, हे शाऊल तू मुझे क्यों सताता है?" (प्रेरितों.9:4)। भाई के विवेक को चोट पहुँचना या उसके विरूद्ध "पाप करने" का तात्पर्य मसीह के विरूद्ध पाप करना है। देह के निर्माण में जो भी सहायता करता है वह मसीह का आदर करता है। वार्तालाप करना भी सत्य है।

आयत 13. यहोशू की प्रतिज्ञा, "परन्तु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा की सेवा नित करूंगा" (यहोशू 24:15), के शब्दों में पौलुस ने घोषणा किया, **इस कारण यदि भोजन मेरे भाई को ठोकर खिलाए, तो मैं कभी किसी रीति से मांस न खाऊँगा।** प्रेरित के लिए "भाई को ठोकर न लगे" सुनिश्चित करना अति अनिवार्य था इसके बजाय कि अपने अधिकार का प्रयोग करे, चाहे उसका अधिकार श्रेष्ठ ज्ञान के द्वारा उचित ही क्यों न ठहरे। उसकी यह इच्छा थी कि उसका अनुकरण किया जाए। पौलुस अपने पाठकों के साथ एक प्रेरित और एक शिक्षक के रूप में व्यक्तिगत संबंध बनाना चाहता था, उसने आत्मिक परामर्शदाता बनने की ज़िम्मेदारी भी स्वीकार किया। उसी समय, उसने यह भी पहचाना कि हरेक मसीही को कैसा जीवन जीना है, का भी निर्णय लेना है।

प्रेरित की निर्भीक स्थिति को उसके निम्न तर्क के परिसर के संदर्भ में समझना

होगा: मूर्तियों के मंदिर में मांस खाना मूर्तिपूजा के बराबर है। चाहे यह निर्बल भाई देखे या न देखे, पाप है। ऐसा प्रतीत होता है कि कुरिंथुस के कुछ लोगों के लिए मूर्तियों के मंदिरों में भोजन छोड़ना अति कठिन था। क्योंकि वे जानते थे कि मूर्तियाँ कुछ भी नहीं है। पौलुस ने प्रत्युत्तर दिया कि मानसिक रूप से मूर्तियों से अलग होने का तात्पर्य मूर्तिपूजा का पुनः विवेचना करना नहीं है। प्रेरित ने, भूतकाल के भविष्यवक्ताओं के समान मूर्तिपूजा से समझौता करने की अनुमति नहीं दी।

जो अपने अधिकार का प्रयोग करने के लिए हठीले थे, तो उनके लिए पौलुस अपना दूसरा विचार प्रस्तुत करता है। जो ज्ञानवान होने का दावा करते हैं और मूर्तियों के मंदिरों में मांस खाते हैं वे जो निर्बल हैं और जिनको उनसे कम ज्ञान है, को मूर्तिपूजक होने के लिए उत्साहित कर सकते हैं। मूर्तियों को समर्पित संस्कारों में भाग लेने से पूर्व उन्हें थोड़ा रुककर अपने "निर्बल" भाइयों के लिए सोचना चाहिए जिनके लिए भी मसीह मरा।

जब हम पौलुस के संदेश को मसीह की कलीसिया में अपने दैनिक जीवन में लागू करते हैं तो हमें उसके दो प्रकार के महत्वपूर्ण प्रस्ताव को स्मरण रखना चाहिए। प्रेरित ने यह नहीं कहा कि निर्बल सदस्यों को देह की नैतिक व्यवहार का अनुसरण करने के लिए उन पर अधिकार जताना चाहिए। बल्कि, उसने कहा कि बलवान मसीहियों को निर्बलों के विवेक का ध्यान रखना चाहिए।

अनुप्रयोग

ज्ञान और समझौता

पौलुस के लिए, मूर्तिपूजा के साथ समझौता करना असंभव था। जो मूर्तिपूजा करते हैं उनके साथ हो लेना, झूठे देवी-देवताओं को चढ़ाए गए मांस खाना, मूर्तिपूजा है। ज्ञान की कोई भी अपील इसको नहीं बदल सकता है। कर्तव्य निर्देशन प्रस्ताव स्वीकार किया जाना चाहिए: पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। जिन वस्तुओं में समानताएं पाई जाती है वे एक दूसरे के बराबर हैं। यह अमिट सत्य हैं जो कर्तव्य निर्देशन प्रस्ताव के अंतर्गत रखा गया है। क्या धार्मिक और नैतिक वक्तव्य स्पष्ट रूप से निर्धारित किया जा सकता है? आज के अधिकांश लोगों का उत्तर "ना" में होगा। पौलुस ने इस प्रश्न का उत्तर बिना किसी हिचकिचाहट के "हाँ" में दिया। मूर्तिपूजा गलत है! "मूर्तिपूजा से बचे रहने" के लिए उसके शिक्षा को किसी योग्यता की आवश्यकता नहीं है (10:14)।

धर्म और नैतिकता में, कर्तव्य निर्देशन वक्तव्य-उचित दिशा में है, जब परमेश्वर का अधिकार-इस सत्यता को स्वीकार करती है। मानव जाति का सीमित ज्ञान है। जब परमेश्वर ने स्वयं इसे कहा है तो मनुष्य के पास आज्ञा मानने के अलावा और कोई दूसरा विकल्प नहीं है (देखें व्यव. 6:4)।

कायनात के पास एक नैतिक दिशा सूचक है। पतरस ने धार्मिक और नैतिक आधार की नींव डाली: परमेश्वर पवित्र है; इसलिए, उसके लोगों को भी पवित्र

बनने की आवश्यकता है (देखें 1 पतरस 1:13-16)। परमेश्वर के अस्तित्व का इनकार करना, उसका मनुष्यों की गतिविधि में शामिल होना, या प्रकृति के प्रति उसका प्रेम, मनुष्यों को इनके नैतिक दिशासूचक यंत्र से लूटना है। एक नास्तिक अपने इस वक्तव्य का समर्थन नहीं कर सकता है कि चोरी करना और हत्या करना गलत है। अधिक से अधिक, वह यह कह सकता है कि वह नैतिक प्रणाली का समर्थन करता है जिसके द्वारा लोग भयानक कार्यों को गलत बताते हैं। पौलुस मूर्तिपूजा की निंदा इसलिए कर सकता था क्योंकि कायनात एक सर्वशक्तिमान परमेश्वर की रचना है जो बुरे और भले का निर्धारण करता है। परमेश्वर के कारण ही मनुष्यों में नैतिक प्रणाली दिखाई देता है। धर्म और नैतिकता के बारे में प्रस्तावित सत्य संभव है क्योंकि जिसका अस्तित्व अनादिकाल से है, वही अपनी सृष्टि को दिशा निर्देशित करता है।

मसीहियों के लिए चुनौतियाँ

कुरिंथुस के मसीही लोग मूर्तियों के मंदिरों में चढ़ाए गए भोजन में, मूर्तिपूजकों के देवी-देवताओं की उपासना करने के बजाय किन्हीं अन्य कारणों से भाग लेना चाहते थे। वे संगति का भोजन अपने मूर्तिपूजक मित्रों के साथ खाना चाहते थे। पौलुस को उनका तर्क समझ में आ गया था। व्यापारियों ने भी अपना मज़बूत तर्क प्रस्तुत किया था कि उन्होंने मूर्तियों के मंदिरों में चढ़ाए गए मांस को सामाजिक और आर्थिक लाभ के लिए खाया। परंतु, परमेश्वर के पितृत्व और यीशु की प्रभुता स्वीकार करने में सामाजिक और आर्थिक मूल्य निहित था। मसीह में पाए जाने का तात्पर्य अपने विवेक को संसार से अलगाव करने की आवश्यकता थी। यदि सामाजिक और आर्थिक क्षतिपूर्ण परिणाम भी भुगतना पड़े तो विश्वासियों को उसके लिए भी तैयार रहना चाहिए था। भक्तिहीनों ने मसीहियों के लिए परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने में सदैव कठिनाइयाँ खड़ी की हैं। मसीहियों को इसकी अपेक्षा करनी चाहिए। मूर्तिपूजा इन भाइयों के संघर्ष का केंद्र बना हुआ था, और जिन लोगों ने मसीह को अपना लिया था उनके लिए इस प्रकार का कार्य असहनीय था (देखें 10:19-21)।

मूर्तिपूजा का दबाव

आज की संसार की धार्मिक स्थिति, दो हज़ार वर्ष पुराने कुरिंथुस की धार्मिक स्थिति से बिल्कुल भिन्न है। समकालीन मसीही लोग, पौलुस का मूर्तिपूजा के विरूद्ध शिक्षा को अप्रासंगिक कहकर छोड़ देते होंगे। हम में से कुछ लोगों पर मंदिरों में देवताओं को चढ़ाए गए भोजन खाने के लिए शायद ही सामाजिक दबाव डाला गया होगा। परंतु, नज़दीकी विश्लेषण यह दिखाता है कि जैसा हम सोचते हैं वैसे पूरी तरह से हमने मूर्तिपूजा को नहीं छोड़ा है।

मूर्तिपूजा के विभिन्न रूप आज भी अभ्यास किया जाता है। भविष्य बताने वाले, मनोविज्ञानी और अन्य जो यह दावा करते हैं कि वे जादुई शक्ति के द्वारा कार्य करते हैं, बहुत ढेर सारे पाए जाते हैं। हस्तलेख पढ़ने वालों और टैरो कार्ड

पढ़ने वालों की सेवा देने वाले विज्ञापन हर जगह दिखाई देता है। यहाँ तक छोटे-छोटे शहरों के अखबारों में भी जन्म कुण्डली का स्तम्भ पाया जाता है। स्पष्ट रूप से, कुछ लोग इस प्रकार के बातों को मानने वालों को भी अपने व्यवसाय में स्थान देते हैं। मूसा ने स्पष्ट किया कि इस प्रकार का अभ्यास, स्वर्ग और पृथ्वी के परमेश्वर की आराधना में अनुचित है (व्यव. 18:10, 11)।

निश्चय, पौलुस ने, यह दावा कि इस प्रकार का अभ्यास हानि रहित मनोरंजन है, को वैसे ही ठुकरा दिया जैसे उसने कुरिंथुस के विश्वासियों का दावा कि मूर्तिपूजा उनके व्यवसाय के लिए लाभकारी है, ठुकरा दिया था। या तो भविष्य परमेश्वर के हाथ में है या फिर तारागणों की चाल पर और उन लोगों हाथ में है जो हस्तरेखा पढ़ते हैं। मनुष्य का भविष्य दोनों स्थानों में नहीं हो सकता है। परमेश्वर अपनी महिमा या अपना सर्वोच्च शासन तारागण, हस्तरेखा, या जादुई शक्ति के साथ नहीं बांटता है। मूर्तिपूजा अभी मरा नहीं है। जो यह मानते हैं कि जन्म कुण्डली देखना या हस्तरेखा दिखाना एक हानि रहित मनोरंजन है, उनसे यह पूछना चाहिए, "क्या इस प्रकार का अभ्यास सबके लिए हानि रहित मनोरंजन है? क्या आपका यह व्यवहार एक निर्बल भाई को पाप करने के लिए उत्साहित नहीं करता है?" पौलुस का विचार यह था कि न केवल हमारा व्यवहार अपने आप में ठीक हों बल्कि दूसरे जो हमें आदर्श मानते हैं कि हमारा अनुकरण करें, के दृष्टि में भी ठीक होना चाहिए।

निर्लज्ज मूर्तिपूजा के साथ ही, मसीही लोग परमेश्वर को उन चिंताओं और रूचि के अधीनस्थ करके जो उन्हें अति महत्वपूर्ण लगता है, के साथ अपने विश्वास का समझौता कर सकते हैं। वास्तव में, जो भी हमारे जीवन में प्राथमिक स्थान लेता है, जो परमेश्वर की महिमा से अधिक महत्वपूर्ण है, वह एक मूर्ति ही है। पौलुस, "लोभ जो मूर्तिपूजा के बराबर है" के विरूद्ध चेतावनी देने से नहीं हिचका (कुलु. 3:5)। इस सिद्धांत के विस्तार के आधार पर, हम अपने परिवार, सम्पत्ति, ख्याति, निपुणता, क्रीड़ा टीम, साहसिक कार्य या इस प्रकार के कई अन्य चीजें हमारे लिए मूर्ति बन सकता है। सैद्धांतिक रूप से, परमेश्वर और उसके महिमा के सम्मुख कुछ भी प्रस्तुत करना गलत होगा; परंतु, इससे आगे, किसी का उदाहरण किसी को भी प्रभावित कर सकता है। जबकि एक व्यक्ति यह मान सकता है कि उसका अपने जीवन के प्रति प्रेम का उचित दृष्टिकोण है, लेकिन वह उनको जिनकी आत्मिक प्रबोधन क्षमता निर्बल है, को दिशाहीन कर सकता है।

समाप्ति नोट्स

[1]ईवेरेट फर्गुसन, *बैकग्राउंड्स ऑफ अर्ली क्रिश्चियनिटी* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विल. बी. एर्डमंस पब्लिशिंग कं., 1987), 110. [2]सी. एल. थॉम्पसन ने अन्यजाति मन्दिरों में खाने की सुविधाओं के पुरातात्विक प्रमाण पर चर्चा की। (सी. एल. थॉम्पसन, "कुरिन्थुस," इन *द इंटरप्रेटर्स डिक्शनरी ऑफ द बाइबल,* सप्लीमेंटरी वॉल्यूम, एड. किथ क्रिम [नैशविले: एबिंग्डन प्रेस, 1962], 180.)। [3]यह ज्ञान उन ज्ञान के सिद्धान्तों से नहीं जुड़ा था जो बाद में कलीसियाओं में समस्या थीं (उदाहरण के लिये, 1 तीमु. 6:20; 2 यूहन्ना 7)। ज्ञानवाद धार्मिक और दार्शनिक विश्वासों का एक

जटिल था, जो प्रारम्भिक कलीसिया से कुछ विचारों को रूपान्तरित करता था। यह द्वंद्ववाद, अस्तित्व का आत्मिक विभाजन था। मानव शरीर सहित भौतिक, ज्ञान के सोच में बुराई का हिस्सा थी; जबकि आत्मिक अच्छा था। क्योंकि भौतिक बातों को बुरा माना जाता था, ज्ञान ने वास्तव में यीशु के देहधारी होने का इनकार किया। उन्होंने कहा कि वह केवल शारीरिक दिखाई देते हैं। इस सिद्धान्त को "आभासवाद" कहा जाता है, यूनानी शब्द में जिसका अर्थ से है "लगना है।" [4]डेविड ई. गारलैंड, *1 कोरिन्थियन्स*, बेकर एक्सेजेटिकल कमेन्टरी ऑन द न्यू टेस्टामेंट (ग्रैंड रेपिड्स, मिच.: बेकर एकैडमिक, 2003), 355. [5]विलियम कॉपर, "विंटर वाल्क एट मून," *पोएम आफ विलियम कॉपर*, खण्ड 2 (चिसविकः सी. व्हिटिंगम, 1817), 139. [6]यह वक्तव्य हरबर्ट फेगल में मनोविज्ञान के संबंध में किया गया था, *अमेरिकन साइकोलोजिस्ट* 14 (मार्च 1959): 115-28. [7]उत्तरकालिक शब्द 10:28 में प्रयोग किया गया है। यद्यपि NASB दोनों शब्दों का अनुवाद "मूर्तियों को चढ़ाया गया" करता है, जो ये दोनों यूनानी शब्द एक मूर्तिपूजक के लिए अलग-अलग लक्षयार्थ हो सकता है। [8]जोसेफस *अगेंस्ट एपियोन* 2.23 [191]. [9]*एनुमा एलिश*, एक अक्कादी साहित्य जो "सृष्टि की कथा" भी कहलाती है, जेम्स बी. प्रिचार्ड, संपादक, *एंसिएंट नियर ईस्टर्न टेक्स्ट्स रिलेटिंग टू दि ओल्ड टेस्टामेंट*, तीसरा संस्करण (प्रिंस्टन: प्रिंस्टन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1969), 60-99. [10]कई लेखक अलग-अलग लेखों में "बुद्धि" ("Lady Wisdom") रूपक मानते हैं। विलापगीत में वह सड़कों में रोती रहती है (1:15, 16)। अपोक्रिफा की बुद्धि साहित्य में बुद्धि को महिला के रूप में चित्रित किया गया है। बुद्धि कहती है, "सर्वशक्तिमान के मुँह से मैं निकली हूँ, और ओंस के समान मैंने धरती को ढंक दिया" (सीराक 24:3; NAB); "यद्यपि, सामर्थ के साथ वह छोर से छोर पहुँचती है [धरती या चाहे स्वर्ग हो] और सभी बातों पर राज्य करता है" (विजडम 8:1; NAB).

[11]NLT में इस प्रकार लिखा हुआ है, "कुछ लोग यह सोचते हैं कि मूर्तियों का वास्तविक अस्तित्व है, इसलिए जब वे उस भोजन का सेवन करते हैं जो मूर्तियों को चढ़ाया गया है, तो वे उसे वास्तविक ईश्वर की उपासना समझते हैं, और उनका निर्बल विवेक उन्हें दोषी ठहरता है।" [12]वाल्टर बाऊर, *ए ग्रीक-इंगलिश लेक्शीकन आफ द न्यू टेस्टामेंट एण्ड अदर अर्ली ख्रिश्चयन लिटरेचर*, तीसरा संस्करण, संशोधित और संपादक फ्रेडरिक विलियम डांकेर (शिकागोः यूनिवर्सिटी आफ शिकागो प्रेस, 2000), 967. [13]ब्रूस जे. मलीना एण्ड जेरोम एच. नेरे, *पोर्ट्रेट्स आफ पॉलः एन आर्खेलोजी आफ एंसियंट परसनालिटी* (लुईविलः वेस्टमिंस्टर जॉ नॉक्स प्रेस, 1996), 184. [14]जेरोम मर्फी-ओकोनर, *सेंट पौल्स कोरिंथः टेक्स्ट्स एण्ड आरख्योलोजी*, तीसरा संशोधित एंव विस्तृत संस्करण (कॉलेज विल, मिनसोटाः लिटर्जीकल प्रेस, 2002), 186.